श्रद्धेय श्री हजारी बाबू

(1921-1985)

'बिजली काटकर कैसा सहयोग चाहते हैं आप हमसे?'

आपात काल लागू होने के बाद मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने जब समाचार पत्रों के सम्पादकों की बैठक बुलाकर सहयोग करने का आग्रह किया तो निस्तब्धता को तोड़ते हुए हजारी बाबू की आवाज गूंजी, ''बिजली काट कर कैसा सहयोग चाहते हैं आप हमसे?'' जोशी जी वरिष्ठ कांग्रेसी नेता व स्वतंत्रता सेनानी हजारी बाबू का अत्यधिक सम्मान करते थे। उन्होंने बिजली बहाली कराके पुन: सहयोग मांगा। इस आत्मीय सम्बन्ध का उदाहरण था कि 6 माह बाद ही हरिदेव जोशी राष्ट्रदूत कोटा के एक कार्यक्रम में मुख्य अतिथी थे और हजारी बाबू उनका हृदय से स्वागत कर रहे थे।

सिन्धी के प्रसिद्ध कवि स्व.नारायण श्याम की पंक्तियां हैं, ''माण्हूं मिड़ेई न माण्हूं/ परवी मिड़ेई न हंज / कंहिं कंहि माण्हूअ मंझि/ मिले बुई बहार जी।'' हिन्दी में इनका आशय है, ''सभी मानव, मनुष्य नहीं होते। सभी पक्षी हंस नहीं होते/ इनमें से भी कुछ ही मनुष्य होते हैं/ जिनमें से बहार की सुगंध आती है।''

पं.हजारीलाल जी शर्मा उसी परम्परा के पुरुष थे, जिसकी चर्चा स्व.नारायण श्याम ने की है। सामने पहाड़ की खड़ी चढ़ाई है। समर्थ व्यक्ति भी अपने सभी विपुल आर्थिक संसाधनों का, सत्ता सम्पर्कों का उपयोग करने के बावजूद जिन शिखरों से आगे नहीं बढ़ पाये, उन्हें पार करके नये शिखर छूने की कामना के साथ स्वतंत्रता के मात्र तीसरे वर्ष में उन्होंने 'राष्ट्रदूत' का दैनिक समाचार पत्र के रुप में प्रकाशन प्रारंभ किया। चमत्कारिक व्यक्तित्व, सहज स्वभाव, सरल सम्प्रेषण और आकर्षक रंग-ढंग के साथ उन्होंने 'राष्ट्रदूत' को मालिक की तरह नहीं अपितु साधक व संरक्षक की भांति दिशा दी।

हजारी बाबू ने अपने चुम्बकीय व्यवहार व 'राष्ट्रदूत' की साख के बूते उस दौर के प्रदेश व देश के अनेक शीर्ष पत्रकारों-साहित्यकारों को अखबार के साथ जोड़ा। सुमनेश जोशी, जुगल किशोर चतुर्वेदी, चंद्रगुप्त वार्ष्णेय, दिनेश खरे जैसे दिग्गज पत्रकार और बाद में विशिष्ट ख्याति अर्जित करने वाले कर्पूरचन्द कुलिश, सौभाग्यमल जैन, कमल किशोर जैन, प्रकाश भण्डारी, ईश्वरमल बाफना, शिवपूजन त्रिपाठी, श्री गोपाल पुरोहित, मोहनलाल गुप्ता, राजेन्द्र अजय, ताराप्रकाश जोशी और वीर सक्सेना जैसे लेखक-साहित्यकार -पत्रकार 'राष्ट्रदूत' से प्रमुखत: उनकी बदौलत जुड़े।

प्राय: देखा जाता है कि सामाजिक दृष्टि से सफल व्यक्ति पारिवारिक संदर्भों में असफल सिद्ध होते हैं। इसी तरह सबको जोड़कर और साथ लेकर चलने वाले व्यक्ति अपने संगठन में असंतोष का सामना करते हैं। मगर 'राष्ट्रदूत' में कार्यरत पत्रकार व अन्य कर्मचारी प्राय: हजारी बाबू से संतुष्ट रहते थे। व्यवहार में खुलापन और सहज पहुंच व संवाद उनके स्वभाव के अंग थे। आर्थिक दृष्टि से उन्होंने अपने किसी पत्रकार या कर्मचारी को कभी तंगहाल होने नहीं दिया। परस्पर संलग्नता का भाव इतना अधिक था कि दुख-सुख, हारी-बीमारी और शादी-गमी में हजारीबाबू उनके साथ मात्र खड़े नहीं दिखाई देते थे आर्थिक सम्बल भी बनते थे। 'राष्ट्रदूत' परिवार उनके लिए शाब्दिक अभिव्यक्ति मात्र नहीं था। वे अखबार में कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति को निजी परिवार का सदस्य मानकर मुखिया की तरह निरन्तर उसे संरक्षण प्रदान करते थे। जिन पत्रकारों व कर्मचारियों ने उनके दौर में 'राष्ट्रदूत' में काम किया वे उनकी संरक्षक प्रवृति के उदाहरण प्रस्तुत करते मानों थकते ही नहीं हैं। यहां नाम और घटनायें उद्धरित करके उन व्यक्तियों की निजता को सार्वजनिक करना उचित नहीं होगा किन्तु निश्चय ही आंखों से टपकती श्रद्धा हजारी बाबू के प्रति उनके हृदयों में बसी अनुग्रह गाथा को स्वयंमेव उद्घाटित करती है।

एक ओर जहां पं.हजारीलाल जी शर्मा का यह उदार रुप था वहीं दूसरी ओर कभी उनके प्रिय पात्र, 'राष्ट्रदूत' के सम्पादक रहे दिनेश खरे के प्रति अपनाया उनका सख्त रुख था। जब वेतन-भत्तों की आड़ में खरे ने हजारीबाबू को ब्लैक मेल करना चाहा तो उन्होंने दृढ़ता से लेबर कोर्ट में लड़ाई लड़ी और उसे अंजाम तक पहुंचाया। उदारता और गलत के सम्मुख डट कर खड़े होने की शक्ति जिस विलक्षणता के साथ उनके व्यक्तित्व में समाहित थी, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

25 जून 1975 की आधी रात को देश में आपातकाल लागू हुआ। रात को ही सभी समाचार पत्रों की बिजली काट दी गई। अगले दिन 26 जून 1975 को राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने अपने निवास स्थान पर समाचार पत्रों के सम्पदाकों की बैठक बुलाई। सैन्सरशिप, आदि की बात कहते हुए जोशी जी ने सबसे सहयोग देने का आग्रह किया। तभी पूर्ण निस्तब्धता को तोड़ते हुए हजारी बाबू की आक्रामक आवाज गूंजी, '' बिजली काटकर कैसा सहयोग चाहते हैं आप हमसे?'' बैठक में सन्नाटा छा गया। वरिष्ठ कांग्रेसी नेता व स्वतंत्रता सेनानी होने के नाते हरिदेव जोशी हजारी बाबू का अत्यधिक सम्मान करते थे। झटके से संभलकर उन्होंने तुंरत बिजली बहाल कराने का आश्वासन दिया और सहयोग के लिए पुन: की गई समझाइश के साथ सबको विदा किया। ज्ञातव्य है कि 'राष्ट्रदूत' का अगला सम्पादकीय तो स्थान रिक्त रखकर नि:शब्द गया ही था बाद में भी पूरे आपातकाल के दौरान अखबार में एक भी आलेख या टिप्पणी उस प्रजातंत्र के कलिमा युग के पक्ष या समर्थन में नहीं छपी। जब स्वयं को दंबग घोषित करने वालों की जुबानें या तो चाटुकारिता का पर्याय बन गई थीं या उनके ऊपर ताले पड़ गये थे, तब हजारी बाबू का यह साहसिक रुप विस्मित व विस्फारित करता था।

हजारीलाल जी, कांग्रेस के प्रख्यात नेता जयनारायण व्यास के मित्र, हितैषी व कट्टर समर्थक थे। मुख्यमंत्री रहते सर्वप्रचलित धारणा थी कि 'राष्ट्रदूत' व्यास जी का पोषित अखबार है। स्वाभाविक था कि मोहनलाल सुखाड़िया के मुख्यमंत्री चुने जाने के बाद राजनीतिक, बौद्धिक, पत्रकार व पाठक वर्ग ने निर्विवाद रुप से माना था कि 'राष्ट्रदूत' के स्वर सुखाड़िया विरोधी होंगे। सबको तब बेहद आश्चर्य हुआ जब ऐसा बिलकुल नहीं हुआ। निष्पक्ष व तटस्थ पत्रकारिता का कर्तव्य निभाते हुए समाचार पत्र ने कभी ऐसा कुछ प्रकाशित नहीं किया जिससे दुर्भावना की गंध आती हो। समाचार चयन, अग्रलेख, विभिन्न आलेख, टिप्पणियां, तथा सम्पादकीय पढ़कर विश्लेषक दृष्टि के दर्शन तो होते थे, पक्षपात दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता था।

स्वतंत्रता सेनानी व प्रखर देशभक्त होने के कारण हजारी बाबू ने जीवन में कभी सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया। 'राष्ट्रदूत' सत्य की प्रतिष्ठा का प्रभावी उपकरण बनकर अलग पहचान बनाने में सफल हुआ। पाठकों की आंखे अंगुलियां बनकर देश, प्रदेश, राजनीति व समाज की नब्ज की चाल तथा दिल की धड़कन को पहचानें, पकड़े, समझें परखें, हजारी बाबू सिद्धान्तत: इस पक्ष में थे। यही कारण था कि 'राष्ट्रदूत' ने भूल कर भी किसी की निंदा नहीं की। उनका दिया हुआ संस्कार उसी शान से अब भी समाचार पत्र का वैशिष्टय बना हुआ है। सनसनीखेज समाचारों और टांग-खिंचाई को जब बड़े-बड़े अखबार भी प्रसार संख्या बढ़ाने के हथियार के रुप में इस्तेमाल करते हैं, राष्ट्रदूत ने अगर इस कीचड़ से दूरी बनाये रखी है तो उसका श्रेय केवल और केवल हजारी बाबू द्वारा प्रदत्त संस्कारों को देना होगा। राजेश शर्मा, राकेश शर्मा व परिवार के बेटों-बहुओं ने सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ सीधे अथवा परोक्ष में, अपने पितृ पुरुष से प्राप्त आशीर्वाद को अक्षुण्ण बनाये रखने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है।

पाठकों की आंखे अंगुलियां बनकर देश, प्रदेश, राजनीति व समाज की नब्ज की चाल तथा दिल की धड़कन को पहचानें, पकड़े, समझें परखें, हजारी बाबू सिद्धान्तत: इस पक्ष में थे। यही कारण था कि 'राष्ट्रदूत' ने भूल कर भी किसी की निंदा नहीं की। उनका दिया हुआ संस्कार उसी शान से अब भी समाचार पत्र का वैशिष्टय बना हुआ है।

पं.हजारीलाल जी शर्मा ने मित्रता, व्यवसाय, सिद्धान्त, समझौतों और विचारों के बीच सदैव एक सुंदर संतुलन बनाये रखा। राजनीति में विपरीत धुरियों तथा धाराओं वाली शाख्सियतें भी उनके निकट सम्पर्क में रहीं। भारतीय जनता पार्टी तब भारतीय जनसंघ के रुप में मंचस्थ थी। राजस्थान में जनसंघ के नेता भैरोसिंह शेखावत और सतीश चंद्र अग्रवाल के साथ उनके खुलकर लगाये कहकहों की ध्वनियां उस दौर के जीवित पत्रकारों के कानों में आज भी गूंजती हैं। बाहर से मस्त मौला हजारी बाबू स्वभाव से साहसी ही नहीं दु:साहसी थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में 'लोकवाणी' के दबदबे के सामने खड़े होने के लिये चुनौती स्वीकार करके खड़ी चढ़ाई चढ़ने की अदम्य इच्छा शक्ति के साथ एक उद्भट ज्वाला की आवश्यकता थी। उन्होंने मात्र चुनौती का मुकाबला नहीं किया, झांझाओं से जूझते हुए शिखर पर पहुंचने का पराक्रम भी दिखाया। पुण्य तिथि के पुनीत अवसर पर पं. हजारीलाल जी शर्मा की प्रेरक स्मृति को शत-शत नमन।

■ **भगवान अटलानी**

भगवान अटलानी

हिन्दी व सिन्धी के वरिष्ठ लेखक भगवान अटलानी की अब तक इक्कीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी के सर्वोच्च सम्मान मीरा पुरस्कार, राजस्थान सिन्धी अकादमी के सर्वोच्च सम्मान, सामी पुरस्कार और उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के एक लाख रुपये के सौहार्द सम्मान से नवाज़े जा चुके अटलानी राजस्थान सिन्धी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हैं।

राष्ट्रदूत का प्रकाशन एक छोटी परन्तु समर्पित टीम के साथ शुरू हुआ। इस टीम के समर्पण भाव के पीछे कारण था हजारी बाबू का खुला तथा सहज स्वभाव तथा संलग्नता का भाव। उनके लिए 'राष्ट्रदूत परिवार' एक शाब्दिक अभिव्यक्ति मात्र नहीं था। राष्ट्रदूत के प्रारम्भिक वर्षों की टीम के फोटो में नज़र आ रहे हैं कपूर चन्द कुलिश, मोहन लाल गुप्ता, श्री प्रकाश पुरोहित, कमल किशोर जैन, पी. एन. दुग्गल, दिनेश खरे, सौभाग्य मल जैन, लप्सा बेडवाल एवं शिवपूजन त्रिपाठी।

शब्द शिल्पियों के अनन्य प्रेमी : हजारी बाबू

पिछले दिनों जब जयपुर में 17 जनवरी से 21 जनवरी तक साहित्य महोत्सव का आयोजन किया गया और जिसमें संसार के विभिन्न भागों से अनेक विख्यात लेखकों ने सहभागिता की, वह अपने आप में एक आल्हादकारी अनुभव था। किन्तु राजस्थान की साहित्यिक बिरादरी का वरिष्ठ वर्ग यह देखकर बहुत क्षुब्ध हुआ कि इस साहित्यिक महाकुंभ में राजस्थान का प्रतिनिधित्व जितने गरिमामय ढंग से होना चाहिए था, वह नहीं हो सका। इस महोत्सव में अस्वस्थता के कारण मैं तो उपस्थित नहीं हो सका किन्तु प्रिन्ट और इलैक्ट्रानिक मीडिया में रोजाना जो भरपूर कवरेज देखी, उसे देखकर मुझे सहसा हजारी बाबू का स्मरण हो आया। हजारी बाबू शब्द शिल्पियों के अनन्य प्रेमी थे। यदि वे इस साहित्यिक महाकुंभ के अवसर पर हमारे बीच होते तो निश्चित रूप से राजस्थान के सृजनकर्मियों को बेहतर ढंग से उजागर किया जाता और जिस गुटपरस्ती के इसमें दर्शन हुए वह शायद देखने में नहीं आती। निश्चित ही हजारी बाबू न केवल इसके प्रायोजकों में से एक होते बल्कि वे इस बात को भी सुनिश्चित करते कि राजस्थान के सृजनकर्मियों को विश्व मंच पर वह स्थान मिलता जिसके लिए वे उपयुक्त पात्र थे। बहरहाल, हजारी बाबू का आज के दिन स्मरण करना एक उदारमना पत्र-स्वामी, साहित्य प्रेमी और अजातशत्रु की यादों को अपनी स्मृतियों में लौटाना है।

हजारी बाबू ने जब से जयपुर में पदार्पण किया तभी से मेरा उनका सम्पर्क बना रहा और मेरे प्रति उनका वत्सल भाव भी भरपूर रहा। आयु में छोटा होने के बावजूद वे मेरा बहुत आदर करते थे और राष्ट्रदूत के लिए हमेशा लिखते रहने का आग्रह करते थे। राष्ट्दूत की पुरानी फाइलें आज भी साक्षी हैं कि मैंने किस प्रकार अपनी काव्य यात्रा के प्रारम्भिक दौर में अपनी रचनाओं से अपना विनम्र योगदान किया था।

यह तथ्य बहुत कम लोगों को ज्ञात है कि हजारी बाबू के समकालीन विख्यात लेखकों में शायद ही कोई ऐसा हो जिससे उनके घनिष्ठ सम्बन्ध न रहे हों। व्याकरणाचार्य पं. किशोरीदास वाजपेयी के प्रति तो उनकी आत्मीयता इतनी अधिक थी कि उनकी पुत्रियों के विवाह का सारा आर्थिक बोझ उन्हीं ने वहन किया था। उस समय संसद सदस्य बन गये राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर से तो उनकी घनिष्ठ मैत्री थी। 'नई धारा' के सम्पादक रामवृक्ष बेनीपुरी और उदयशंकर भट्ट जैसे अनेक कद्दावर कवि और लेखक उनके परिचय क्षेत्र में थे। यहां तक कि पांडे बेचन शर्मा 'उग्र' जैसे बदजुबान साहित्यिक महारथी के कटु वचनों को भी वे सहर्ष झेलते थे। हजारी बाबू को साहित्यिक पत्रकारिता का अच्छा-खासा अनुभव था, जब वे कलकत्ता में थे तो उन्होंने 'रानी' नामक एक साहित्यिक पत्रिका निकाली थी और आज से सात दशक पहले भी वे जनवाणी प्रिन्टर्स जैसे मुद्रणालय का संचालन कर रहे थे, जिसमें लगभग सभी भारतीय भाषाओं में मुद्रण की व्यवस्था थी।

संस्कृत में एक श्लोक है, जिसका अर्थ है - ''जो व्यक्ति उत्सव में, व्यसन में, राज्य द्वार पर संकट पड़ने पर और श्मशान में साथ रहता है, वही सच्चा बान्धव और मित्र होता है।'' हजारी बाबू ऐसे ही उदारमना व्यक्ति थे जो इस श्लोक के भावार्थ को पूर्णतया अपने आचरण से सार्थक करते थे।

प्रकटत: उनकी जैसी समृद्ध, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि थी और जैसे भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित संस्कार उन्हें मिले थे, उसके कारण हजारी बाबू ने राजस्थान की राजधानी जयपुर में भी छोटे से लेकर बड़े लेखकों तक सभी से अपना मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखा। उस जमाने में जब बड़े पत्र स्वामियों के लिये भी महंगी कारें रखना दुर्लभ था, हजारी बाबू कुछ समारोहिक अवसरों पर ही कार में बैठते थे, अन्यथा रिक्शा में बैठकर चलना उन्हें अत्यन्त प्रिय था। जौहरी बाजार स्थित शर्मा रेस्टोरेंट में अक्सर उन्हें मित्र मंडली के साथ चाय-पान करते देखा जा सकता था। प्रारम्भ में तो राष्ट्रदूत का कार्यालय हल्दियों के रास्ते में था जहां से उठकर बाद में वह अपने स्वनिर्मित भवन में चमेलीवाला मार्केट आ गया। दोनों ही जगह स्थित कार्यालयों में उनके पास साहित्यानुरागियों का जमावड़ा रहता था। नगर में कोई भी कवि गोष्ठी होती तो वे काव्य रस का आनन्द लेने के लिए वहां अवश्य उपस्थित होते थे। जब उन्होंने राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया और राज्य की प्रथम विधानसभा में चुनाव जीतकर विधायक बने तो विधानसभा के फ्लोर से उन्होंने सार्वजनिक हित के अनेक मुद्दे उठाये। हजारी बाबू उन विरले लोगों में थे जिन्हें मन का छोटापन छू भी नहीं गया था, अपने विरोधियों के प्रति भी वे अपने मैत्री भाव को बराबर बनाये रखते थे।

संस्कृत में एक श्लोक है, जिसका अर्थ है - ''जो व्यक्ति उत्सव में, व्यसन में, राज्य द्वार पर संकट पड़ने पर और श्मशान में साथ रहता है, वही सच्चा बान्धव और मित्र होता है।'' हजारी बाबू ऐसे ही उदारमना व्यक्ति थे जो इस श्लोक के भावार्थ को पूर्णतया अपने आचरण से सार्थक करते थे।

जहां तक हजारी बाबू का अपने प्रतिष्ठान में काम करने वाले कर्मचारियों और पत्रकारों से व्यवहार का सम्बन्ध था वे भले ही बहुत अनुशासनप्रिय थे किन्तु उन्होंने कभी किसी के साथ चूक होने पर दुर्व्यवहार नहीं किया पर यह भी सत्य है कि जब-जब उनके सामने ऐसी चुनौतियां उत्पन्न हुईं जब उनके किसी सहकर्मी ने पत्र की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाने की कोशिश की, तो उन्होंने उसे अपने प्रतिष्ठान से सम्बन्ध विच्छेद करने को भी विवश कर दिया और इस बात से संकोच नहीं किया कि वे कानूनी कार्यवाही में उलझ सकते हैं। कुछ सहकर्मियों ने उनकी उदारता का अनुचित लाभ भी उठाया, इसके बावजूद हकीकत यह है कि अनेक व्यक्तियों को उन्होंने पत्रकारिता का प्रशिक्षण दिया जिन्होंने आगे चलकर राजस्थान में पत्रकारिता के परिदृश्य को बदलने में अपनी प्रभावी भूमिका निभाई। सच तो यह है यदि हजारी बाबू उस समय राष्ट्रदूत का प्रकाशन नहीं करते तो राजस्थान की पत्रकारिता का मानचित्र कुछ और ही होता।

आज राजस्थान में हिन्दी पत्रकारिता जिस सम्मान के साथ खड़ी है, उसमें हजारी बाबू के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। मेरे लिये यह भी एक सुखद प्रतीति है कि हजारी बाबू ने जो परम्पराएं कायम की उनका अनुसरण उनके सुयोग्य पुत्र राजेश शर्मा, राकेश शर्मा और सोमेश शर्मा तथा अन्य परिजन बड़ी कुशलता से कर रहे हैं।

आज उनकी पुण्यतिथि पर मैं हजारी बाबू की स्मृति को प्रणाम करता हूं।

■ **डॉ. मनोहर प्रभाकर**

डॉ. मनोहर प्रभाकर

डॉ. मनोहर प्रभाकर (पूर्व जनसंपर्क निदेशक) वरिष्ठ साहित्यकार व पत्रकार हैं। उन्होंने साहित्य व पत्रकारिता विषय पर अनेक पुस्तकें लिखी है। उन्हें अब तक राष्ट्रीय स्तर पर राज्य स्तर के अनेक पुरस्कार व सम्मान मिल चुके हैं। दो बार उन्हें सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारतेन्दु पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। संस्कृत, अंग्रेजी के अनेक विख्यात ग्रंथों का उन्होंने हिंदी व राजस्थानी में अनुवाद किया है।